

सुख सदन सुहावन (७२)

राजु करो रस धाम साई सचा साई सचा।

पूर्ण थियनिव मन काम साई सचा साई सचा॥

शील सिंघासन बृजो साहिब दान देत हो हरी नाम।

प्रेमी प्रजा सुजसु बखाने गूंजि रहियो सारो गाम॥१॥

आनंद सिंधु में नितु नितु विलसो संग युगल अभ्राम।

नूतन नूतन खेल खिलावो सदा प्रसन्न सियाराम॥२॥

अखण्ड जोति जगाई जग में प्रेम की ललित ललाम।

सतिसंग जे रस रंग में साहिब विहरो आठों याम॥३॥

कल्पवृक्ष से मधुर मनोहर चरण कमल की छाम।

प्रणतनि जननि पालक मेरे मालिक अद्भुत तेरे हैं गुण ग्राम॥४॥

मधुर राज महाराजा बापू श्री मैगसि मनोहर नाम।

चंद्र वदन सुख सदन सुहावन गोद राजत श्यामा श्याम॥५॥